*Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal*
Volume 3 | Issue 4 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

# मध्यप्रदेश में पर्यटन विकास की संभावनाएं एवं चुनौतियां

***Tourism Development in Madhya Pradesh: Prospects and Challenges***

**डॉ. लक्ष्मी केवट**

भूगोल

**सारांश**

मध्यप्रदेश भारत का हृदय प्रदेश है जो ऐतिहासिक, पुरातात्विक, धार्मिक, प्राकृतिक एवं जनजातीय पर्यटन की दृष्टि से असाधारण समृद्धि रखता है। खजुराहो एवं साँची जैसे UNESCO विश्व धरोहर स्थल, कान्हा-बांधवगढ़ जैसे विश्वप्रसिद्ध टाइगर रिजर्व, उज्जैन-ओंकारेश्वर जैसे महत्वपूर्ण धार्मिक केन्द्र एवं पचमढ़ी जैसे मनोरम प्राकृतिक स्थल इस प्रदेश को पर्यटन की दृष्टि से विशिष्ट बनाते हैं। 2023-24 में प्रदेश में लगभग 1017 लाख पर्यटकों का आगमन हुआ जो अखिल भारतीय स्तर पर प्रमुख पर्यटन राज्यों में इसकी स्थिति को सुदृढ़ करता है। तथापि, अपर्याप्त आधारभूत संरचना, सीमित अंतर्राष्ट्रीय प्रचार, मौसमी पर्यटन की समस्या, कुशल मानव संसाधन की कमी एवं पर्यावरणीय चुनौतियाँ इस क्षेत्र के समुचित विकास में बाधक हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यप्रदेश के पर्यटन की वर्तमान स्थिति, विकास की संभावनाओं, विद्यमान चुनौतियों तथा भविष्य की नीति रणनीति का भौगोलिक एवं आर्थिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

**मुख्य शब्द:** पर्यटन विकास, मध्यप्रदेश, UNESCO विश्व धरोहर, इकोटूरिज्म, टाइगर रिजर्व, जनजातीय पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, पर्यटन भूगोल, सतत पर्यटन।

## 1. प्रस्तावना

पर्यटन विश्व के सबसे तेजी से बढ़ते उद्योगों में से एक है। विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) के अनुसार, वैश्विक पर्यटन वैश्विक GDP में लगभग 10 प्रतिशत का योगदान करता है एवं विश्व में प्रत्येक दस में से एक रोजगार पर्यटन क्षेत्र से जुड़ा है। भारत की दृष्टि से पर्यटन एक महत्वपूर्ण विदेशी मुद्रा अर्जक एवं रोजगार सृजक क्षेत्र है।

मध्यप्रदेश भारत का सबसे बड़ा राज्य (क्षेत्रफल में) है और इसकी भौगोलिक विविधता इसे पर्यटन का एक आदर्श गंतव्य बनाती है। विंध्याचल एवं सतपुड़ा की पर्वतमालाएँ, नर्मदा-चंबल-सोन-बेतवा जैसी नदियाँ, घने वनों में बसे राष्ट्रीय उद्यान, प्राचीन मंदिर एवं किले, लोककलाओं की जीवंत परम्परा—ये सभी मिलकर मध्यप्रदेश को एक बहुआयामी पर्यटन गंतव्य के रूप में स्थापित करते हैं।

प्रदेश सरकार ने 'MP Tourism' के नाम से विशेष पर्यटन विभाग स्थापित किया है तथा 'एक जिला-एक पर्यटन उत्पाद' जैसी नवीन नीतियों के माध्यम से पर्यटन के विकेंद्रीकृत विकास का प्रयास किया है। तथापि, प्रदेश की विशाल पर्यटन संभावनाएं अभी पूर्णतः साकार नहीं हो पाई हैं। यही कारण है कि इस विषय का भौगोलिक एवं नीतिगत विश्लेषण अत्यंत प्रासंगिक एवं आवश्यक है।

## 2. मध्यप्रदेश का भौगोलिक परिवेश एवं पर्यटन संभावना

### 2.1 भौगोलिक स्थिति एवं विविधता

मध्यप्रदेश 21°6' से 26°30' उत्तरी अक्षांश तथा 74°9' से 82°48' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 3,08,252 वर्ग किलोमीटर है जो देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग 9.38 प्रतिशत है। यह राज्य उत्तर में उत्तर प्रदेश, पूर्व में छत्तीसगढ़, दक्षिण में महाराष्ट्र, पश्चिम में गुजरात एवं राजस्थान से घिरा है।

भौगोलिक दृष्टि से प्रदेश को पाँच प्राकृतिक प्रदेशों में विभक्त किया जा सकता है — मालवा का पठार, विंध्याचल, सतपुड़ा पर्वत श्रेणी, बुंदेलखंड एवं बघेलखंड। यह भौगोलिक विविधता विविध प्रकार के पर्यटन उत्पादों के विकास की असीम सम्भावनाएं प्रस्तुत करती है।

### 2.2 पर्यटन स्थलों का वर्गीकरण

मध्यप्रदेश में पर्यटन स्थलों की विविधता अतुलनीय है। इन्हें विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसा कि निम्न सारणी में प्रदर्शित है:

**सारणी 1: मध्यप्रदेश में पर्यटन स्थलों का वर्गीकरण**

| पर्यटन श्रेणी | प्रमुख स्थल | जिला / संभाग | विशेषता |
|---|---|---|---|
| ऐतिहासिक/पुरातात्विक | खजुराहो, साँची, ग्वालियर किला | छतरपुर, रायसेन, ग्वालियर | UNESCO विश्व धरोहर |
| धार्मिक | उज्जैन, ओंकारेश्वर, महेश्वर | उज्जैन, खंडवा, खरगोन | ज्योतिर्लिंग, तीर्थ |
| वन्यजीव / इकोटूरिज्म | कान्हा, बांधवगढ़, पेंच | मंडला, उमरिया, सिवनी | टाइगर रिजर्व |
| प्राकृतिक | पचमढ़ी, अमरकंटक, भेड़ाघाट | होशंगाबाद, अनूपपुर, जबलपुर | हिल स्टेशन, जलप्रपात |
| जनजातीय / सांस्कृतिक | भोपाल, मांडू, बाघ गुफाएँ | भोपाल, धार, धार | संग्रहालय, लोककला |
| आध्यात्मिक / योग | चित्रकूट, ओरछा, दतिया | सतना, निवाड़ी, दतिया | रामायण सर्किट |

*स्रोत: मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग, 2023 एवं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण*

सारणी 1 से स्पष्ट है कि मध्यप्रदेश में पर्यटन स्थलों की असाधारण विविधता विद्यमान है। ऐतिहासिक से लेकर धार्मिक, वन्यजीव से लेकर जनजातीय पर्यटन तक—प्रत्येक श्रेणी में प्रदेश के पास विश्वस्तरीय गंतव्य हैं। खजुराहो एवं साँची को UNESCO की विश्व धरोहर सूची में स्थान प्राप्त है, जो अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र हैं।

## 3. मध्यप्रदेश में पर्यटन की वर्तमान स्थिति

### 3.1 पर्यटकों की संख्या में रुझान

विगत एक दशक में मध्यप्रदेश में पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। COVID-19 महामारी के कारण 2020-21 में भारी गिरावट आई, किन्तु उसके उपरान्त पर्यटन क्षेत्र ने तेजी से पुनरुद्धार किया। निम्न सारणी में वर्षवार पर्यटक आगमन के आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं:

**सारणी 2: मध्यप्रदेश में वर्षवार पर्यटक आगमन**

| वर्ष | घरेलू पर्यटक (लाख में) | विदेशी पर्यटक (हजार में) | कुल (लाख में) | वृद्धि दर % |
|---|---|---|---|---|
| 2018-19 | 856.9 | 615.0 | 862.6 | 8.2% |
| 2019-20 | 898.4 | 621.3 | 904.6 | 4.9% |
| 2020-21 | 312.5 | 98.4 | 313.5 | -65.3% |
| 2021-22 | 524.7 | 142.6 | 526.1 | 67.8% |
| 2022-23 | 789.3 | 398.7 | 793.3 | 50.8% |
| 2023-24 | 1012.6 | 512.4 | 1017.7 | 28.3% |

*स्रोत: मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग वार्षिक प्रतिवेदन, 2023-24*

सारणी 2 के विश्लेषण से महत्वपूर्ण तथ्य उभरते हैं। 2020-21 में COVID के कारण पर्यटक संख्या में 65.3 प्रतिशत की भारी गिरावट आई। इसके पश्चात 2021-22 एवं 2022-23 में क्रमशः 67.8 एवं 50.8 प्रतिशत की वृद्धि दर के साथ पर्यटन क्षेत्र ने उल्लेखनीय पुनरुद्धार किया। 2023-24 में 1017 लाख से अधिक पर्यटकों के आगमन ने मध्यप्रदेश को देश के अग्रणी पर्यटन राज्यों में स्थापित किया। घरेलू पर्यटकों की तुलना में विदेशी पर्यटकों की संख्या अभी भी कम है, जो अंतर्राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

### 3.2 प्रमुख जिलों में पर्यटन

प्रदेश में पर्यटन का वितरण असमान है। कुछ जिले अत्यधिक पर्यटन आकर्षण के केन्द्र हैं, जबकि अनेक संभावनाशील स्थल अभी उपेक्षित हैं। निम्न सारणी प्रमुख जिलों की पर्यटन स्थिति प्रस्तुत करती है:

**सारणी 3: मध्यप्रदेश के प्रमुख जिलों में पर्यटन**

| जिला | प्रमुख आकर्षण | वार्षिक पर्यटक (लाख) | पर्यटन श्रेणी | UNESCO मान्यता |
|---|---|---|---|---|
| छतरपुर | खजुराहो मंदिर | 45.2 | ऐतिहासिक | हाँ |
| उज्जैन | महाकालेश्वर, कुम्भ | 210.4 | धार्मिक | नहीं |
| उमरिया | बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व | 38.7 | वन्यजीव | नहीं |
| होशंगाबाद | पचमढ़ी | 29.5 | प्राकृतिक | नहीं |
| रायसेन | साँची स्तूप | 22.1 | पुरातात्विक | हाँ |
| जबलपुर | भेड़ाघाट, धुआँधार | 67.8 | प्राकृतिक | नहीं |
| सतना | चित्रकूट | 41.3 | धार्मिक | नहीं |

*स्रोत: जिला पर्यटन कार्यालय एवं MP Tourism Board, 2023*

सारणी 3 से स्पष्ट है कि उज्जैन सर्वाधिक पर्यटक आकर्षित करता है, जिसका मुख्य कारण महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग एवं सिंहस्थ महाकुम्भ है। जबलपुर एवं छतरपुर भी महत्वपूर्ण पर्यटन केन्द्र हैं। सतना-रीवा क्षेत्र में चित्रकूट एवं बाणसागर जैसे आकर्षणों की उपस्थिति के बावजूद यहाँ पर्यटन का पूर्ण विकास अभी शेष है। यह असमान वितरण समन्वित क्षेत्रीय पर्यटन नियोजन की आवश्यकता को इंगित करता है।

## 4. मध्यप्रदेश में पर्यटन विकास की प्रमुख संभावनाएं

### 4.1 UNESCO विश्व धरोहर स्थलों का संरक्षण एवं पर्यटन

खजुराहो के मंदिर (1986) एवं साँची के बौद्ध स्मारक (1989) UNESCO विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित हैं। इन स्थलों की वैश्विक पहचान अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करने की असीम क्षमता रखती है। भोजपुर का शिव मंदिर एवं भीमबेटका

की शैलचित्र गुफाएँ (जो पहले से UNESCO सूची में हैं) भी विश्वस्तरीय पर्यटन की सम्भावनाएं रखती हैं। इन स्थलों के आसपास विश्वस्तरीय पर्यटन अवसंरचना के विकास से अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या कई गुना बढ़ सकती है।

**4.2 इकोटूरिज्म एवं वन्यजीव पर्यटन**

मध्यप्रदेश को 'टाइगर स्टेट' के रूप में जाना जाता है। कान्हा, बांधवगढ़, पेंच, सतपुड़ा, संजय-दुबरी, पन्ना एवं रातापानी—कुल 7 टाइगर रिजर्व इस प्रदेश में हैं। बाघ दर्शन के लिए विदेशी वन्यजीव प्रेमियों में मध्यप्रदेश की विशेष पहचान है। इकोटूरिज्म के विकास से स्थानीय जनजातीय एवं ग्रामीण समुदायों को आजीविका के अवसर प्रदान किए जा सकते हैं, जिससे संरक्षण एवं विकास के बीच संतुलन स्थापित होगा।

**4.3 धार्मिक एवं आध्यात्मिक पर्यटन**

उज्जैन का महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, ओंकारेश्वर, महेश्वर, चित्रकूट, ओरछा, दतिया, मैहर, अमरकंटक—ये सभी अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक तीर्थ हैं। प्रधानमंत्री द्वारा महाकाल लोक का उद्घाटन (2022) एवं रामायण सर्किट के अन्तर्गत चित्रकूट का विकास इस क्षेत्र में पर्यटन की असाधारण संभावनाओं को और अधिक मजबूती प्रदान करता है। सिंहस्थ महाकुम्भ (उज्जैन) के दौरान करोड़ों श्रद्धालुओं का आगमन प्रदेश की धार्मिक पर्यटन क्षमता का प्रमाण है।

**4.4 जनजातीय एवं सांस्कृतिक पर्यटन**

मध्यप्रदेश में गोंड, बैगा, कोल, सहरिया, भील, कोरकू आदि अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनकी लोककला, नृत्य, संगीत, हस्तशिल्प एवं जीवनशैली पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का विषय हैं। बाघ की गुफाएँ (धार), भीमबेटका (रायसेन), डिंडोरी में बैगा जनजाति का पारम्परिक जीवन—ये सभी जनजातीय पर्यटन के उत्कृष्ट केन्द्र हो सकते हैं। 'होमस्टे' एवं 'विलेज टूरिज्म' के माध्यम से यह पर्यटन ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त कर सकता है।

**4.5 MICE एवं साहसिक पर्यटन**

भोपाल, इन्दौर एवं ग्वालियर में MICE (Meetings, Incentives, Conferences, Exhibitions) पर्यटन की विशाल संभावनाएं हैं। पचमढ़ी में ट्रैकिंग, भेड़ाघाट में नौकायन, चंबल घाटी में वाटर स्पोर्ट्स, एवं विंध्याचल में रॉक क्लाइम्बिंग साहसिक पर्यटन के महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करते हैं। इन्दौर जो देश का सर्वाधिक स्वच्छ शहर रहा है, कॉर्पोरेट पर्यटन एवं मीट-ईट-एक्सप्लोर मॉडल के लिए आदर्श स्थान है।

## 5. पर्यटन विकास की चुनौतियाँ एवं समाधान

मध्यप्रदेश में पर्यटन विकास की प्रक्रिया अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। इन चुनौतियों एवं उनके संभावित समाधानों का सारणीबद्ध विवरण निम्नवत है:

**सारणी 4: पर्यटन विकास की चुनौतियाँ एवं समाधान**

| क्र. | चुनौती | प्रभाव | संभावित समाधान |
|---|---|---|---|
| 1 | अपर्याप्त आधारभूत संरचना | पर्यटक असुविधा, कम ठहराव | PPP मॉडल, स्मार्ट सिटी से जोड़ना |
| 2 | कुशल मानव संसाधन की कमी | सेवा गुणवत्ता में कमी | हॉस्पिटैलिटी प्रशिक्षण केंद्र |
| 3 | पर्यावरणीय क्षरण | इकोटूरिज्म को खतरा | इको-सेंसिटिव जोन नीति |
| 4 | प्रचार-प्रसार की कमी | अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक कम | डिजिटल मार्केटिंग, रोड शो |
| 5 | मौसमी पर्यटन | वर्षभर आय असमान | ऑल-सीजन उत्पाद विकास |
| 6 | कनेक्टिविटी की कमी | दूरस्थ स्थल अनदेखे | हेलीकॉप्टर, रेल, हाइवे विस्तार |

*स्रोत: मध्यप्रदेश पर्यटन नीति 2023 एवं शोधकर्ता द्वारा संकलित*

### 5.1 आधारभूत संरचना की कमी

अनेक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों तक पहुँचने के लिए उचित सड़क, रेल एवं हवाई सम्पर्क का अभाव है। जबलपुर, रीवा, सतना, शहडोल जैसे संभागीय मुख्यालयों तक तो अच्छी कनेक्टिविटी है, परन्तु कान्हा राष्ट्रीय उद्यान, चित्रकूट, ओरछा, मांडू जैसे प्रमुख पर्यटन स्थल अभी भी बेहतर सड़क एवं परिवहन सुविधाओं की प्रतीक्षा में हैं। होटल एवं गेस्टहाउस की कमी के कारण पर्यटकों का ठहराव अवधि सीमित रहती है, जिससे प्रति पर्यटक आय कम होती है।

**5.2 पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिक दबाव**

अत्यधिक पर्यटन से वन्यजीव अभयारण्यों एवं संवेदनशील पारिस्थितिक क्षेत्रों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। पचमढ़ी में अनियंत्रित पर्यटन से वन एवं जलस्रोतों पर दबाव बढ़ रहा है। टाइगर रिजर्व क्षेत्रों में वाहनों की अत्यधिक आवाजाही वन्यजीवों के व्यवहार को प्रभावित करती है। 'कैरिंग कैपेसिटी' (वहन क्षमता) के आधार पर पर्यटन की सीमा निर्धारित करना अनिवार्य है।

**5.3 कुशल मानव संसाधन की अनुपलब्धता**

पर्यटन क्षेत्र में प्रशिक्षित गाइड, होटल प्रबंधक, टूर ऑपरेटर, भाषा विशेषज्ञ एवं हॉस्पिटैलिटी कर्मियों की भारी कमी है। विशेषकर ग्रामीण एवं जनजातीय पर्यटन क्षेत्रों में स्थानीय युवाओं को पर्यटन से जुड़े व्यवसाय में प्रशिक्षित करने की अत्यंत आवश्यकता है। इससे रोजगार सृजन के साथ-साथ पर्यटकों को गुणवत्तापूर्ण अनुभव भी प्राप्त होगा।

**6. पर्यटन का आर्थिक योगदान एवं भावी संभावनाएं**

पर्यटन क्षेत्र मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निम्न सारणी में पर्यटन से प्रदेश की अर्थव्यवस्था को होने वाले योगदान का विवरण प्रस्तुत किया गया है:

**सारणी 5: मध्यप्रदेश में पर्यटन का आर्थिक योगदान**

| संकेतक | 2019-20 | 2022-23 | 2030 लक्ष्य (अनुमानित) |
|---|---|---|---|
| पर्यटन से GSDP में % योगदान | 3.8% | 4.1% | 7.0% |
| पर्यटन से रोजगार (लाख में) | 18.4 | 21.7 | 40.0 |
| पर्यटन राजस्व (करोड़ ₹) | 12,450 | 18,320 | 50,000 |
| होटल / लॉज इकाइयाँ | 4,210 | 5,680 | 10,000 |
| पंजीकृत टूर ऑपरेटर | 1,840 | 2,370 | 5,000 |

*स्रोत: मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 एवं MP Tourism*

सारणी 5 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि पर्यटन क्षेत्र मध्यप्रदेश के GSDP में 2022-23 में 4.1 प्रतिशत का योगदान कर रहा है। 2030 तक इसे 7 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया है। पर्यटन से रोजगार की संख्या 21.7 लाख से बढ़ाकर 40 लाख तक पहुँचाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य है। पर्यटन राजस्व में 18,320 करोड़ से 50,000 करोड़ तक की वृद्धि की संभावना है, जिसके लिए समन्वित नीतिगत प्रयास आवश्यक हैं।

## 7. वर्तमान एवं भविष्य की पर्यटन नीति आवश्यकता

### 7.1 पर्यटन सर्किट का विकास

मध्यप्रदेश में पर्यटन सर्किट विकसित कर पर्यटकों को एकाधिक स्थलों की यात्रा का अनुभव प्रदान किया जा सकता है। 'हेरिटेज सर्किट' (ग्वालियर-ओरछा-खजुराहो), 'बौद्ध सर्किट' (साँची-भोजपुर-विदिशा), 'नर्मदा सर्किट' (अमरकंटक-ओंकारेश्वर-महेश्वर), 'वाइल्डलाइफ सर्किट' (कान्हा-बांधवगढ़-पेंच) एवं 'रामायण सर्किट' (चित्रकूट-सतना) जैसे सर्किट पर्यटकों का ठहराव बढ़ाकर प्रति पर्यटक आय में वृद्धि करेंगे।

**7.2 डिजिटल पर्यटन एवं स्मार्ट टूरिज्म**

भविष्य में पर्यटन का स्वरूप तेजी से डिजिटल होता जा रहा है। AI-आधारित यात्रा योजना, AR/VR से विरासत स्थलों का आभासी भ्रमण, डिजिटल टिकटिंग, ई-गाइड एप्लिकेशन, तथा सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर के माध्यम से प्रचार—ये सभी भविष्य की पर्यटन रणनीति के अनिवार्य अंग बन रहे हैं। मध्यप्रदेश पर्यटन को इस दिशा में व्यापक निवेश करना होगा।

**7.3 सतत एवं जिम्मेदार पर्यटन**

पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय समुदाय की भागीदारी एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को ध्यान में रखकर 'सतत पर्यटन' (Sustainable Tourism) की नीति अपनाना भविष्य की अनिवार्य आवश्यकता है। 'हरित होटल' प्रमाणीकरण, जीरो-वेस्ट टूरिज्म, कार्बन-न्यूट्रल यात्रा जैसी अवधारणाएँ मध्यप्रदेश के पर्यटन को वैश्विक मानकों पर लाने में सहायक होंगी।

**7.4 विंध्य एवं बघेलखंड क्षेत्र का पर्यटन विकास**

रीवा, सतना, शहडोल, अनूपुर एवं सीधी जिलों में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। रीवा का महान जलप्रपात (जो विश्व के सबसे बड़े जलप्रपातों में से एक है), चित्रकूट, बाणसागर बांध, अमरकंटक, सोन घड़ियाल अभयारण्य, देवताल झील—ये सभी विंध्य-बघेलखंड क्षेत्र के पर्यटन मानचित्र पर महत्वपूर्ण स्थान पाने के योग्य हैं। इस क्षेत्र में विशेष पर्यटन पैकेज एवं प्रोत्साहन नीति की आवश्यकता है।

## 8. निष्कर्ष

मध्यप्रदेश भारत के पर्यटन मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण किन्तु अल्पउपयोगित गंतव्य के रूप में स्थित है। प्रदेश की भौगोलिक विविधता, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, जैव-विविधता एवं आध्यात्मिक महत्व इसे एक आदर्श पर्यटन गंतव्य बनाते हैं। खजुराहो, साँची, कान्हा, बांधवगढ़, उज्जैन, पचमढ़ी, भेड़ाघाट, चित्रकूट, ओंकारेश्वर—ये सभी अपनी विशिष्ट पहचान के साथ देश-विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

2023-24 में 1017 लाख से अधिक पर्यटकों का आगमन प्रदेश के पर्यटन की बढ़ती माँग को प्रतिबिम्बित करता है। पर्यटन से GSDP में 4.1 प्रतिशत का योगदान एवं 21 लाख से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार—ये आंकड़े पर्यटन की आर्थिक महत्ता को स्पष्ट करते हैं।

तथापि, आधारभूत संरचना की अपर्याप्तता, अंतर्राष्ट्रीय प्रचार का अभाव, कुशल मानव संसाधन की कमी, मौसमी पर्यटन की समस्या एवं पर्यावरणीय दबाव—ये चुनौतियाँ प्रदेश के पर्यटन विकास की गति को बाधित कर रही हैं। इन चुनौतियों के समाधान के लिए समन्वित सरकारी-निजी प्रयास, दीर्घकालिक नीतिगत दृष्टि एवं स्थानीय समुदाय की सहभागिता अनिवार्य है।

यदि प्रदेश 2030 तक पर्यटन राजस्व को 50,000 करोड़ एवं पर्यटन रोजगार को 40 लाख तक पहुँचाने के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है, तो आधारभूत संरचना विकास, डिजिटल पर्यटन, सतत पर्यटन नीति एवं क्षेत्रीय पर्यटन सर्किट के विकास पर युद्धस्तर पर कार्य करना होगा।

## 9. सुझाव

1. पर्यटन स्थलों तक 'लास्ट माइल कनेक्टिविटी' सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख पर्यटन स्थलों को नेशनल हाईवे एवं एयरपोर्ट से जोड़ा जाए।
2. प्रत्येक जिले में कम-से-कम एक 'पर्यटन जोन' विकसित किया जाए जहाँ सभी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हों।
3. जनजातीय क्षेत्रों में 'होमस्टे' एवं 'कम्युनिटी बेस्ड टूरिज्म' को प्रोत्साहन देकर स्थानीय लोगों की आजीविका बढ़ाई जाए।
4. विंध्य-बघेलखंड क्षेत्र के लिए विशेष पर्यटन पैकेज एवं रेल-हवाई कनेक्टिविटी विकसित की जाए।
5. खजुराहो, साँची एवं भीमबेटका के लिए विश्वस्तरीय इंटरप्रिटेशन सेंटर स्थापित किए जाएँ।
6. पर्यटन में कार्यरत युवाओं के लिए हॉस्पिटैलिटी, गाइडिंग एवं भाषा प्रशिक्षण केंद्र प्रत्येक संभागीय मुख्यालय पर खोले जाएँ।
7. AI, AR एवं VR तकनीक का उपयोग करते हुए 'MP Virtual Tour' प्लेटफार्म विकसित किया जाए।
8. टाइगर रिजर्व में वहन क्षमता के अनुसार पर्यटन की सीमा निर्धारित कर 'इको-जोन' घोषित किए जाएँ।
9. अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए प्रमुख वैश्विक पर्यटन मेलों में मध्यप्रदेश की उपस्थिति बढ़ाई जाए।
10. 'Incredible MP' ब्रांडिंग अभियान को सोशल मीडिया, यूट्यूब एवं ओटीटी प्लेटफार्म पर बहुभाषीय रूप से प्रचारित किया जाए।
11. पर्यटन से संबंधित स्वच्छता, सुरक्षा एवं पर्यावरण रक्षा हेतु जन-जागरण अभियान चलाए जाएँ।

12. सरकारी एवं निजी क्षेत्र के मध्य PPP मॉडल के माध्यम से पर्यटन अवसंरचना में बड़े पैमाने पर निवेश आकर्षित किया जाए।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग (2023). मध्यप्रदेश पर्यटन वार्षिक प्रतिवेदन 2022-23. भोपाल: MP Tourism Board।
2. मध्यप्रदेश शासन (2023). मध्यप्रदेश पर्यटन नीति 2023. पर्यटन एवं संस्कृति विभाग, भोपाल।
3. भारत सरकार (2023). India Tourism Statistics 2023. पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. UNWTO (2023). World Tourism Barometer. United Nations World Tourism Organization, Madrid.
5. सिंह, सविन्द्र (2021). भारत का भूगोल. प्रयागराज: प्रयाग पुस्तक भवन।
6. मिश्र, डी.एन. एवं पाण्डेय, एस.के. (2020). 'मध्यप्रदेश में पर्यटन विकास: अवसर एवं चुनौतियाँ'. विंध्य शोध पत्रिका, APS University, Rewa, 10(1), 18-35।
7. Archaeological Survey of India (2022). Annual Report on Heritage Sites of Madhya Pradesh. New Delhi: ASI.
8. केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय (2023). Project Tiger: Tiger Reserve Status Report. नई दिल्ली।
9. नीति आयोग (2022). SDG India Index and Dashboard 2021-22. भारत सरकार, नई दिल्ली।
10. शुक्ला, अखिलेश एवं तिवारी, राम प्रसाद (2019). 'बघेलखंड में पर्यटन की संभावनाएं'. भूगोल एवं पर्यावरण शोध जर्नल, 5(2), 41-58।
11. Gupta, R.C. (2021). Tourism Geography of India. Jaipur: Rawat Publications.
12. UNESCO (2022). World Heritage Sites in India: Conservation and Management. Paris: UNESCO.

13. मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण (2023-24). मध्यप्रदेश सरकार, वित्त विभाग, भोपाल।

14. Sharma, P.D. (2020). Ecotourism and Wildlife Tourism in Central India. New Delhi: APH Publishing.

15. पाण्डेय, विनोद कुमार (2018). 'मध्यप्रदेश में धार्मिक पर्यटन का भौगोलिक विश्लेषण'. सागर जर्नल ऑफ ज्योग्राफी, 14(3), 67-82।

16. World Bank (2021). Sustainable Tourism for Development. Washington D.C.: World Bank Group.